



अपशिष्ट में नये उपयोग की तलाश

रसोई के कचरे से लेकर शहर के स्थानों तक कचरे पर पुनर्विचार

01 अक्टूबर, 2026

वर्ष 2014 में शुरू किया गया **स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम)** स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन और व्यवहार में बदलाव लाने के लिए एक व्यापक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ है। इस मिशन में स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस) के माध्यम से व्यापक नागरिक भागीदारी के लिए जगह भी बनाई गई, जिसे 2017 में सामूहिक स्वच्छता कार्रवाई के लिए एक वार्षिक अभियान के रूप में शुरू किया गया था। अभियान में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, दृश्य स्वच्छता और कचरा मुक्त सार्वजनिक स्थानों पर अपना ध्यान केंद्रित किया गया है।

इस अभियान के साथ ही, **वेस्ट टू वेल्थ यानी अपशिष्ट से संपदा का विचार** पूरे भारत में कचरे के प्रति देखने का नजरिया और उसे उपयोगी बनाने के तरीके को बदल रहा है। यह फेंकी गई सामग्री को एक ऐसे संसाधन के रूप में देखता है जिसे **पुनर्प्राप्त किया जा सकता है, उसका फिर से उपयोग किया जा सकता है और उसे नई उपयोगी वस्तु में परिवर्तित** किया जा सकता है। सरकार ने इस दृष्टिकोण को चक्रीयता, संसाधन दक्षता और टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन से जोड़ा है। स्वच्छ भारत मिशन - शहरी 2.0 के तहत, शहरों को कचरे के स्रोत पर ही उसका पृथक्करण, अपशिष्ट प्रसंस्करण और कचरे को उपयोगी वस्तु में बदलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह बदलाव न केवल बड़े प्रसंस्करण संयंत्रों में, बल्कि घरों, समुदायों और स्थानीय संस्थानों में भी दिखाई दे रहा है।

छोटे खाद डिब्बे से घरों में बदलाव शुरू

कई भारतीय घरों के लिए, रसोई के कचरे को खाद में बदलना कोई नई बात नहीं है। यह एक ऐसा व्यवहार है जो आज की अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों में एक नई जगह पा रहा है। आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में, वरिष्ठ नागरिक के. **सुब्बलक्ष्मी** ने बताया है कि इस आदत को घरों में कैसे अपनाया जा सकता है।





नगर निगम ने हाल ही में नागरिकों को घरेलू खाद बनाने के लिए प्रोत्साहित करने में अपना अनुभव साझा किया। उसकी रसोई में उत्पन्न गीले कचरे को खाद में बदल दिया जाता है जिसका उसके बगीचे में उपयोग किया जाता है, जिसे पहले खुले में फेंक दिया जाता था।

ऐसा ही एक प्रयास चंडीगढ़ में कोविड-19 महामारी के दौरान शुरू हुआ। चंडीगढ़ निवासी **कमलजीत कौर देओल** ने घर पर गीले रसोई के कचरे से खाद बनाना शुरू कर दिया। एक घरेलू आदत के रूप में जो

शुरू हुआ वह धीरे-धीरे दूसरों को घरेलू खाद बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता गतिविधियों में बदल गया। उनके प्रयासों ने नागरिकों को **एक स्वच्छ और हरित शहर** की दिशा में योगदान करने के लिए प्रेरित करने में मदद की है।

जैसे-जैसे घरेलू खाद बनाने के इन व्यक्तिगत प्रयासों ने व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करना शुरू किया, इस विचार को संगठित सामुदायिक शिक्षा में भी जगह मिलने लगी। तेलंगाना के सिद्दीपेट में, समर्पित अपशिष्ट प्रबंधन शिक्षण केंद्र '**स्वच्छ बाड़ी**' युवाओं को घरेलू खाद बनाने से लेकर सामुदायिक स्तर की खाद बनाने तक व्यावहारिक अपशिष्ट प्रबंधन तरीकों के बारे में जानकारी प्रदान कर रहा है। इस दृष्टिकोण के आधार पर, 141 नगरपालिका क्षेत्रों में इसी तरह के केंद्रों की योजना बनाई गई है, जो जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन पर समुदायों में जागरूकता लाते हैं और सीखने में व्यावहारिक बनाते हैं।

इसलिए एक छोटे खाद डिब्बे से जो शुरू होता है उसका व्यापक प्रभाव हो सकता है। यह गीले कचरे की नियमित धारा को लैंडफिल से दूर रखते हुए पौधों को नया जीवन देता है। इसके साथ ही, सबसे खास बात है कि यह बतलाता है कि जहां अपशिष्ट स्वयं उत्पन्न होता है वहीं अपशिष्ट प्रबंधन कैसे शुरू हो सकता है।

जब खरपतवार भी अवसर बन जाता है

घरेलू कचरे के अलावा, समुदाय उन सामग्रियों का भी उपयोग ढूंढ रहे हैं जिनका प्रबंधन करना लंबे समय से मुश्किल रहा है। असम में मोरीगांव जिले के बोरचिला गांव में, इस दृष्टिकोण को एक ऐसे पौधे पर लागू किया जा रहा है जो जल निकायों के आसपास रहने वाले समुदायों के लिए एक लगातार चुनौती बन गया है। जलकुंभी, जिसे स्थानीय रूप से '**पानी मटेका**' के नाम से जाना जाता है, एक आक्रामक जलीय पौधा है जो जल निकायों में तेजी से फैलता है। अपनी



SHG women from Borchila weaving products out of water hyacinth

सौंदर्य अपील के बावजूद, जलकुंभी एक समस्याग्रस्त खरपतवार बन गया है, जो नदियों, तालाबों और झीलों जैसे मीठे जल निकायों को बोझिल बना रहा है। इसकी अतिवृद्धि मछली पकड़ने, परिवहन और मनोरंजन जैसी गतिविधियों को बाधित करती है, जिससे इन जल स्रोतों का उपयोग कम हो जाता है।

हालांकि, बोरचिला गांव की महिलाओं ने जलकुंभी को एक अवसर में बदलने का एक नया तरीका ढूंढ लिया है। इस पौधे को केवल जल निकायों में अवांछित वृद्धि के रूप में देखने के बजाय, उन्होंने इसे हस्तशिल्प में बदलना शुरू कर दिया है। असम राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत समर्थित, इस पहल ने भाग लेने वाली महिलाओं के लिए आय का एक अतिरिक्त स्रोत बनाया है, जो इस काम के माध्यम से प्रति माह कम से कम **10,000 रुपये** कमाती हैं। जिसे कभी जल निकायों के लिए एक समस्या के रूप में देखा जाता था, उसे अब आजीविका और उद्यम के संसाधन में बदल दिया जा रहा है। अनुभव बताता है कि मूल्य और आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए संसाधन पुनर्प्राप्ति अपशिष्ट प्रबंधन से परे बढ़ सकती है। बोझ बनी रह सकने वाली उन सामग्रियों को उपयोगी उत्पादों में बदलकर ऐसी पहल संसाधनों के अधिक टिकाऊ उपयोग को बढ़ावा देते हुए स्थानीय उद्यम का समर्थन कर सकती हैं।

नारियल कचरे को नया बाजार मिला

एक तेजी से फैलने वाले पौधे को ग्रामीण आजीविका के स्रोत में बदलने से, अब शहरी कचरे के बोझ में योगदान देने वाली एक अन्य सामग्री पर ध्यान केंद्रित किया गया है। पटना में, नारियल के छिलके, फाइबर और अन्य अवशेषों को पुनर्प्राप्त किया जा रहा है और उनसे उपयोगी उत्पाद बनाए जा रहे हैं। पटना शहर में **हर दिन लगभग 25-30 मीट्रिक टन नारियल का छिलका** उत्पन्न होता है, जो पहले लैंडफिल साइटों पर डाल दिया जाता था जिससे कचरे का पहाड़ बन जाता था। इस अपशिष्ट धारा से निपटने के लिए, पटना नगर निगम ने दानापुर क्षेत्र में एक प्रसंस्करण केंद्र स्थापित किया है, जिससे फेंके गए नारियल अवशेषों को उत्पादक वस्तुओं में बदलने का मार्ग खुल गया है।



पटना में नारियल अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्र

यह पहल स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्रचारित अपशिष्ट प्रबंधन के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण को दर्शाती है, जहां कचरे को केवल निपटान के लिए एक सामग्री के बजाय एक संसाधन के रूप में देखा जा रहा है।

इस प्रसंस्करण केंद्र को नारियल कचरे से उपयोगी घटकों को निकालने और उन्हें कृषि, बागवानी और अन्य व्यावसायिक उपयोगों में अनुप्रयोगों के साथ उत्पादों में बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया है। प्रति दिन 10 टन की प्रारंभिक प्रसंस्करण क्षमता के साथ, संयंत्र को कई पारियों में संचालित करने और प्रति दिन 30 टन तक बढ़ाने की योजना है।

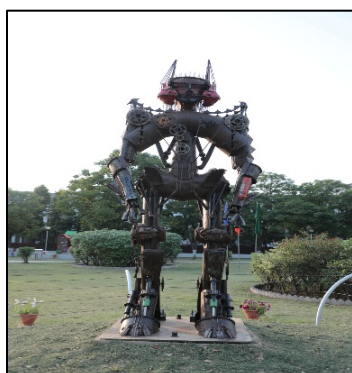


नारियल के अपशिष्ट रेशों से बनी रस्सियां

नारियल कचरे के विभिन्न घटकों को प्राप्त किया जा सकता है और उनका उत्पादक उपयोग किया जाता है। गीले अवशेषों को उच्च गुणवत्ता वाले जैविक खाद में बदला जाता है, जबकि नारियल के रेशों को निर्माण, पैकेजिंग, चटाई और हस्तशिल्प में अनुप्रयोगों के साथ कॉयर रस्सियों में बदला जाता है। कोकोपीट एक और मूल्यवान उत्पादन है, जिसमें नर्सरी और छत के बगीचों सहित कृषि और बागवानी में अनुप्रयोग हैं, जहां बढ़ते माध्यम के रूप में इसका उपयोग महत्व प्राप्त कर रहा है।

इन सामग्रियों को पुनर्प्राप्त और संसाधित करके, यह पहल निपटान की आवश्यकता वाले नारियल कचरे की मात्रा को कम करती है और अपशिष्ट से बने उत्पादों को उपयोगी वस्तुओं की श्रेणी में ला दिया जाता है। यह दृष्टिकोण स्थानीय आजीविका और रोजगार के अवसर को बढ़ाते हुए चक्रीय अर्थव्यवस्था में तेजी लाता है।

जब कचरा सार्वजनिक पसंद बन जाता है



वेस्ट टू वेल्थ यानी अपशिष्ट से संपदा का विचार यह भी दिखा रहा है कि शहर फेंकी गई सामग्री का कैसा इस्तेमाल करता है। रद्दी को केवल कचरे के रूप में मानने के बजाय, शहर सार्वजनिक स्थानों और सामुदायिक सुविधाओं में इसका पुनः उपयोग करने के तरीके खोज रहे हैं। ऐसा ही एक दृष्टिकोण वेस्ट टू वंडर पार्क का निर्माण है, जहां फेंकी गई सामग्री को सार्वजनिक स्थानों और आकर्षणों के हिस्से के रूप में एक नया महत्व दिया

जाता है। यह दृष्टिकोण एक चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों को दर्शाता है, जो निरंतर उपयोग के लिए ऐसी सामग्रियों को कम करने, पुनः उपयोग, मरम्मत और पुनर्नवीनीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

चंडीगढ़ इस दृष्टिकोण का एक प्रारंभिक उदाहरण पेश करता है। इसका रॉक गार्डन औद्योगिक और घरेलू कचरे का उपयोग करके बनाया गया था जो दर्शाता है कि सार्वजनिक स्थान पर फेंकी गई सामग्री का रचनात्मक रूप से पुनः उपयोग कैसे किया जा सकता है। चंडीगढ़ में 1.75 एकड़ में फैला वेस्ट टू वंडर पार्क भी विकसित किया गया है। पार्क में संरचनाएं लोहे की चादरें, छड़, पंखे और ऑटोमोबाइल पार्ट्स जैसी बेकार सामग्री से बनाई गई हैं।

दिल्ली ने अपने वेस्ट टू वंडर पार्क के माध्यम से इसी तरह का नजरिया पेश का है, जहां औद्योगिक अपशिष्ट, रस्दी धातु और लैंडफिल से प्राप्त छोड़े गए ऑटोमोबाइल भागों को प्रतिकृतियां और अन्य संरचनाएं बनाने के लिए फिर से तैयार किया जाता है। मनोरंजन और शहरी सौंदर्यीकरण के



अलावा, ऐसे स्थान दर्शाते हैं कि कैसे बेकार सामग्री को उत्पादक और सार्वजनिक उपयोग के बुनियादी ढांचे में जोड़ा जा सकता है। शहरी सौंदर्यीकरण के अलावा, पार्क स्वच्छ ऊर्जा बुनियादी ढांचे को एकीकृत करता है, जिसमें 50 किलोवाट की संयुक्त क्षमता वाले सौर पेड़ और छत पर सौर पैनल शामिल हैं। उत्पादित बिजली की आपूर्ति बिजली वितरण कंपनियों को की जा सकती है, जिससे अपशिष्ट और नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादक उपयोग को बढ़ावा देते हुए राजस्व सृजन के लिए एक अतिरिक्त अवसर पैदा होता है।

अपशिष्ट से संसाधन तक

इन उदाहरणों से पता चलता है कि कैसे फेंकी गई सामग्री को पुनर्प्राप्त किया जा सकता है, पुनः उपयोग किया जा सकता है, और अंतिम निपटान के लिए सीधे भेजे जाने के बजाय उसे उत्पादक उपयोग में वापस लाया जा सकता है। ऐसी सामग्रियां जो अन्यथा कचरे के बोझ को बढ़ाएंगी, उन्हें सार्वजनिक स्थानों, रचनात्मक आकर्षणों और, कुछ मामलों में, आर्थिक मूल्य के स्रोतों के घटकों में बदला जा सकता है।

अपशिष्ट से धन दृष्टिकोण परिप्रेक्ष्य में बदलाव के साथ शुरू होता है, कचरे को त्यागने वाली चीज के रूप में देखने से लेकर संसाधन के रूप में इसकी क्षमता को पहचानने तक। उचित पृथक्करण, पुनर्प्राप्ति

और प्रसंस्करण के माध्यम से, छोड़ी गई सामग्री को उपयोगी उत्पादों में बदला जा सकता है, जो स्वच्छ समुदायों, संसाधन दक्षता और एक **चक्रीय अर्थव्यवस्था** की ओर बदलाव का समर्थन करता है।

संदर्भ

आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय

<https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2067772&lang=2®=3>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2210020&lang=1®=6>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2075883&lang=2®=3>

पीआईबी बैकग्राउंडर

<https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NotelId=160036&ModuleId=3®=48&lang=1>

पीआईबी शोध

पीके/केसी/आरटी/एके/एचबी